डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

मध्य पुरापाषाण काल: 1 लाख BC-40,000BC (Middle Paleolithic)

मध्यपुरा पाषाण काल की समय सीमा 50,000 से 40,000 BC निर्धारित की जाती है| नियंडरथल मानव का संबंध इसी काल से है| इस काल के औजार प्रौद्योगिकी की बुनियादी विशेषता थी: शल्क (पपड़ी) निर्मित औजार उद्योग|

इस काल को फलक संस्कृति भी कहा जाता है| इस काल में कोर की बजाय फलक या पपरी उपकरणों का निर्माण किया गया| इस काल में मानव के हथियार बनाने की तकनीकि में परिवर्तन दिखाई देता है| औजार बनाने में चर्ट तथा जैस्पर जैसे नरम पत्थरों का प्रयोग किया गया| अधिकांश औजार फलक पर बनाये गये| औजारों में खुरचनी (scraper), बेधनी (points), बेधक (bores), लक्षनी आदि प्रमुख थे|

भारत में मध्यपुरा पाषाण काल के स्थल के प्रमाण गोदावरी नदी तट और नर्मदा घाटी से प्राप्त होती है| गोदावरी के तट पर स्थित नेवासा इस काल का प्रतिनिधित्व करता है| नर्मदा घाटी के हथनौरा नामक स्थान से मानव का प्रथम जीवाश्म प्राप्त हुआ| इस तरह इस काल के औजार अधिकांशतः मध्य भारत, दक्कन, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक और उड़ीसा में पाये गए है|

उच्च या उत्तर पुरापाषाण काल: 40,000BC-10,000 BC (Upper Paleolithic)

यह पुरापाषाण काल का अंतिम काल है, इसकी समय सीमा 40,000 से 10,000 BC तक मानी जाती है| इस काल के बाद मध्य पाषाण काल माना जाता है| इस समय तक आधुनिक मानव होमोसेपियंस पृथ्वी पर आ चुका था| इस काल में कई नवीन परिवर्तन हुए तथा मानव गतिविधियों में पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई|

इस काल में मानव जीवन में कुछ विशेष परिवर्तन के प्रमाण प्राप्त होते है| हालाँकि अभी भी मानव का जीविका का साधन शिकार ही था लेकिन सामुदायिक जीवन का विकास हो चूका था | अनेक व्यक्ति झुंडो में रहने लगे थे| हालाँकि अभी सामाजिक असमनाताओं एवं व्यक्तिगत संपत्ति का भावना का उदय नहीं

हुआ था| कुछ स्तर पर पुरुष एवं महिलाओं के बीच श्रम विभाजन प्रारंभ हो चूका था, जैसे कि पुरुष भोजन संग्राहक का काम करता था और महिलाएं घर का देखभाल करती थी|

निवास के लिए गुफाओं के अलावे संभवतः झोपड़िया भी बनायीं जाने लगी थी| हड्डियों से बनी सुइयों की सहायता से जानवरों के चमड़े को वस्त्र के रूप में सिलकर पहना जाने लगा था| कला एवं धर्म के प्रति लोगों की अभिरुचि बढ़ी| भीमबेटका की कुछ ऐसी गुफाओं में चित्र पाये गए है जहाँ प्रकास पहुंचना कठिन है| कुछ चित्र तो ऐसे है जिन्हें बनाते समय कलाकार को काफी कष्टमय दशा में बैठना पड़ा होगा| कुछ इतिहासकार का मानना है कि शायद यह गुफा मंदिर के समान ही रही होगी और इन्हें बनाने के पीछे इनका विश्वास जानवरों को बस में करना रहा होगा|

इस काल में ब्लेड पॉइंट बुरिन जैसे बेहतर फलक के निर्माण के साथ ही हड्डियों के उपकरण भी बनाये जाने लगे| कला तथा चित्रकला के साथ ही नक्कासी का भी विकास हुआ| भारत में इस काल के कई कलात्मक नमूने प्राप्त हुए है| बेलन घाटी के लोब्दानाला नामक स्थान से अस्थि (bone) की बनी मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है| इसी प्रकार भीमबेटका के प्राकृतिक शैलाश्रयों से कई गुफा चित्रकारियां प्राप्त होती है|

इस काल के मनुष्यों ने देश के कई शैलाश्रयों में गुफा चित्रकारी के नमूने छोड़ रखे है| उत्तरप्रदेश में लेखनियां, कोहवर, विजयगढ़; मध्यप्रदेश में आदमगढ़, भीमबेटका, धर्मपुरी, भोजपुर; छतीसगढ़ में कावड़ा पहाड़, जोगीमारा गुफाएं में तमिलनाडु - एड्कल, कनाल; और आन्ध्र प्रदेश में कोप्पल ऐसे प्रमुख स्थल है|

स्पष्ट है कि 5 लाख से 10,000 BC तक के काल को भारत में पुरापाषाण काल कहा जाता है| इस काल में मनुष्य पूर्णतया आखेट पर निर्भर था तथा उनका भोजन मांस अथवा कंदमूल हुआ करता था| इस कालखंड में मानव खानाबदोश जीवन व्यतीत करते हुए केवल खाद्य पदार्थो का ही उपभोक्ता हुआ करता था| यहाँ तक कि उसका आवास भी पहाड़ों की गुफाओं, वृक्षों आदि पर हुआ करता था|

हालाँकि क्रमशः विकास कि प्रक्रिया चल रही थी और पूर्व तथा मध्य पुरापाषाण काल के मुकाबले उत्तर पुरापाषाण काल का मानव अधिक आधुनिक हो चला था|